दोयिर एते की तीन कविताएँ

1.

शिकार

पूर्णिमा की हर रात
हमारे पूर्वज एकत्र होते हैं
नदी के किनारे
हथियार हैं उनके साथ
बांस के तीर और दाव
प्रवेश करते हैं
उस जंगल में
जहाँ कभी मानव जाति का पतन हुआ था,
आज अविचल खड़ा है वह,
कफन की तरह शांत, खामोश!

जंगल गवाह है,
हर पुत्र के जन्म और पिता की मृत्यु का
जंगल गवाह है,
हर उन जनजातीय नियमों का
जहाँ हर आदमी जंगल का बच्चा है।
सदियों से हर पीढ़ी का जन्म इसी प्रकार हुआ,
जवान शरीर में पुराना खून
यह शरीर और वह जंगल
एक ही परंपरा से बंधे हैं सब,
चमकते चाँद में,
रात की ठंडी रौशनी में,
लोग बिना परवाह
अपनी परछाईं डालते हैं।
रात की ठंडी रोशनी
छुपी हुई परछाइयों को प्रकट करती है,
लंबी काली शाखाओं पर
अंधेरे में
जीवन का आदिम गीत गाता,
शिकारी और शिकार के बीच
एक पागल कर देने वाला नृत्य
प्रकट होता है
लुका-छिपी करते हुए।

पुरुषों के गुजरते पाँव,
ताजे मांस की तलाश में।
एक झटके में टूटी हुई टहनी,
सर्र...! एक हल्की-सी सरसराहट,
गर्रर्! एक खतरनाक गुर्राहट,
कानों में जैसे कोई भयंकर आवाज,
ललाट पर पसीने की बूंद,
बहरे कर देने वाले सन्नाटे में
जंगल में जैसे जान आ गई
क्रूर जानवरों का यह क्षेत्र
धुंध और वाष्प से घना
चारो ओर पंजे, शल्क और दाँत के निशान,
अपने अस्तित्व को बताते हैं
स्वयं को पुनर्जीवित करते हैं।

अतीत में की गई भूल
दोहराना नहीं चाहिए
जब एक भाई को गोली मार दी गई
एक अमावस की रात में,
एक अंधेरे आकाश के नीचे
दोन्यी-पोलो उसकी आत्मा को आशीर्वाद दें!
क्योंकि उसकी मृत्यु बहुत बुरी थी
कभी-कभी पुरुषों का दिल
अपने हक से अधिक की तलाश करना चाहता है

पर भूल जाता है कि वह जंगल में है,
जीवन को नियंत्रण करता यह जंगल।
अंदर-बाहर, बाहर-अंदर,
अपनी ही लय में मदमस्त,
आशीर्वाद और श्राप से भरा हुआ
जहाँ अपने कार्य का निष्पादन
अथवा सीमा के उल्लंघन में से
किसी एक का चुनाव हमें स्वयं करना होता है।

प्रातःकाल की शोभा खिल उठती है
नींद टूटती है, मनोरम चिड़ियों की चहचहाहट से
थके हुए शिकारियों को जगाती है यह सुबह,
भोर निकट है, हमें जल्दी करना होगा
सूरज उग रहा है धीरे-धीरे,
ओह! माँ, पक्षी अभी उड़ेगी अपने लक्ष्य की
तलाश में
बहुत जल्द ही
फुर्तीला हिरण, कर्कश सूअर, डरपोक गिलहरी
भालों और तीरों से परे होंगे।

पीछे घर के चूल्हों में
प्रत्याशा में आग जलाई गई होगी
बच्चों को लेकर चिंतित
और पुरुषों की प्रतीक्षातुर पत्नियाँ
भूख और पुरा-भय के साथ
बाट जोहती हैं
बूंद जैसे छलकने के लिए बिल्कुल हो तैयार।

2.

लुप्तप्राय लिपि

खोये हुए शब्दों की कहानी
अभी भी हमें सताती है
हम पर आरोप लगाया जाता है कि
हमारे पास इतिहास और प्रामाणिकता का अभाव है
हमारी वाचिकता को सुनी-सुनाई बातें कहकर
खारिज कर दिया गया,
इसलिए
आज हम अभाव से पीड़ित हैं
सभी भाषाओं को लेकर, जो परंपराओं से निर्मित हैं।

पौराणिक समय में, हमारे देवताओं ने हमें उपहार दिया
उत्कीर्ण प्रतीक और संकेत
चमड़े, छाल और पत्ती में
पर यह हास्यकर है या दुःखद घटना
कि उन चमड़े, छाल और पत्तियों को
भूख में चबाया गया था
बकरियों, मेमने और कुत्तों द्वारा
या डूब गया था
प्रचंड बाढ़ में और नदी में
यहां तक कि
तानी ने भूख में
उन चमड़े के टुकड़ों का सहारा लिया
प्रतीक और संकेत
सब खो गए।

स्मृति में केवल हम जीवित रहे
हम अपनी कहानियों को सुनाने की इच्छा रखते हैं
आध्यात्मिक न्यूब के जादुई मंत्रों में।
दादी-नानी की स्मृतियाँ
बस गई हैं तन-मन में,
उत्सुक कान और आँखों में समाई
उनसे की बातचीत के दृश्यों को
याद करते रहते हैं,
विचार से तेज़ शब्द, आवाज और ध्वनियाँ
सब बह गया

एक उफनती नदी की तरह
सूखी कलम ने फिर गोद लिया
आधुनिक आवाज़ों द्वारा चिह्नित और हस्ताक्षरित
कुछ शब्द, वर्ण।
लेकिन हमने उन कहानियों को अधिक गाया,
अपने बचाव में कि
हमारे चमड़े में उतारे गए शब्द नहीं बचे
लेकिन, सब कहने की बात है
याद रखने के लिए स्मृतियाँ काफी हैं
जिनमें बसी हैं अनगिनत कहानियाँ
अपनी पहचान के ऐतिहासिक साक्ष्य।
ख़ाली आसमान के ख़ालीपन को भरने के लिए
मेरा यह आधुनिक दिमाग है,
अपने पूर्वजों की ओर आकर्षित
जिनके गीत हम आज भी गाते हैं
स्मृति में टंकी स्वर को पहचानते हैं
और सुर में अपने होने को साबित करते हैं।

(**टिप्पणी:** अरुणाचल प्रदेश की लगभग हर जनजाति के पास कोई लिखित लिपि नहीं है। हैरानी की बात यह है कि प्रत्येक के पास एक कहानी है कि कैसे उन्होंने अपनी लिपि खो दी। गालो जनजाति में लिखित शब्द को 'बोई बोला' कहा जाता है। कहानी यह है कि हमारे पूर्वज आबो तानी (पिता तानी) को एक दयालु उई (आत्मा) द्वारा एक जानवर की सूखी खाल में लिखकर लिपि का ज्ञान दिया गया था। भूख के कारण या गलती से तानी ने सूखी खाल को खा लिया और बोई बोला का ज्ञान हमसे हमेशा के लिए छूट गया। -दोयिर एते)

3.
बेचैनी

जब मैं चली, तो तुम रोई,
उन कोल के पेड़ों के बीच
खड़ी होकर
अपनी बूढ़ी आँखों पर
दबाव डालते हुए
तुमने देखा, जहाँ तक नज़र जा सकती थी,
मेरे पिता की बनाई भूमि पर खड़ी हो
तुमने अपने झुर्रिदार हाथ लहराए
सिर्फ तुम ही जानती थी
मुझे अच्छी तरह
मैं तुम्हारा ही अंश थी
जिस जिगर के टुकड़े को
खून-पानी से सनी औरत बनने के लिए
अपने से दूर देश भेज रही थी
मैं अब तुम्हारे चूल्हे का साथी नहीं थी,
जबकि मैं तुम्हारा हाथ पकड़े रखना चाहती थी
लेकिन मेरा सौभाग्य उल्टा था
मैं रेत की तरह फिसलती चली गई।

मैं गहनों और मोतियों से सजी थी,
जो सबके लिए अनमोल थे
पर तुमने देखा
तांबे और पीतल को, लिपटे और फुफकारते
मेरे पैरों और हाथों को जलाते हुए।
मैं कितनी असहाय और बेचारी थी,
एक-एक सांस के लिए जूझ रही थी,
उस वक्त मैं अपने भाइयों को
ज़ोर-ज़ोर से गाते हुए देख रही थी,
यह मेरे लिए सम्मान की बात कैसे हो सकती थी?

मुझे लग रहा था कि
मैं जैसे बलि का बकरा होऊँ
सब मिलकर गा रहे हों
और मैं अकेले आँसू में डूबी थी।

तोप्पो गोन* की तरह
क्या मैं

पत्थर में बदल गयी थी?
क्या मैं
ऐसे ही अकेली रह जाऊंगी हमेशा?
यह एक सिहरन
एक बेचैनी
मेरे सपने में तैर रही थी।
जबकि-
मैं तुम्हारे प्यार का स्वाद चखना चाहती हूँ,
तुम्हारी कोमल छाती पर सोना चाहती हूँ,
तुम्हारा दुलार महसूस करना चाहती हूँ,
तुम्ही एकमात्र सहारा हो जिसे मैं जानती हूँ।

अब, जब तुम लेटी हो
जलती हुई लौ के समीप
सिमटी हुई परछाइयाँ और गीली आँखें
और साथ में पिता की दबी आवाज
जैसे तुम इंतजार कर रही हो
और सिर्फ मेरा इंतजार कर रही हो!
इस घड़ी मैं जो साँस ले रही हूँ
यह एक ऐसा जीवन है
जिसमें मैंने खुद को खो दिया है।
जबकि मैं तुम्हारा हाथ थामे रखना चाहती थी
तुम्हारे हाथ अब भी मेरे पिता की भूमि से जुड़े हैं,
जो अब भी बहुत नरम और मुलायम हैं।
कोल अब सूख गए हैं
तुम्हारा चूल्हा अब ठंडा पड़ गया है,
जबकि मेरे पास सिर्फ कुछ क्षण बचे हैं
तुमसे उधार में लिए हुए।

(तोप्पो गोन- गालो लोककथा में तोप्पो गोन एक युवा दुल्हन है, जो अपने पति के घर जाते समय पत्थर में बदल गई।)

***

***(लेखकीय परिचय** : दोयिर एते राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। नार्थ ईस्ट राइटर फोरम्स के अरुणाचल चैप्टर के अंतर्गत 'मैट्रिक्स' पुस्तक के दो खंडों के संपादन का कार्य किया है तथा वर्तमान में 'दी अरुणाचल टाइम्स' समाचार-पत्र में पाक्षिक स्तंभ लेखन का कार्य नियमित रूप से कर रही हैं। आदिवासी लेखन एवं अध्ययन में आपकी गहरी अभिरुचि है और आप अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसायटी में सक्रिय सदस्य के रूप में अपना योगदान दे रही हैं।
मोबा: 9436046749, ई-मेल : doyir.ete@rgu.ac.in)*